अगस्त २०१४

क़ीमत १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

"मुझे आज कॅडबरी खाने की इच्छा हो रही है।"

इसकी घड़ी कितनी अच्छी है! मुझे भी ऐसी ही चाहिए। "मुझे यह नहीं मिल रहा है इसलिए मुझे बिल्कुल भी चैन नहीं पड़ रहा है।" ओहोहो! हमारे पास इतना सबकुछ होते हुए भी किसी एक चीज़ के न होने से हमें चैन नहीं पड़ता। जो है उसका संतोष नहीं होने की वजह से हम आनंद में नहीं रह पाते।

तो आईए, इस अंक में हम "इच्छा" का विज्ञान समझें। इसका स्वरूप और इसके परिणाम व साथ ही "संतोष" की तरफ कैसे जाएँ? आदि की सुंदर समझ परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में दी है। इसे पढ़कर और समझकर संतोष की तरफ आगे बढ़ें।

- डिम्पल महेता

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: ५
अखंड क्रमांक: १७
अगस्त २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

अनुक्रमणिका

३ दादाजी कहते हैं...
४ यह तो नई ही बात!
६ सुखी मनुष्य का कुर्ता
१० इच्छा का घड़ा
१२ अपने आपको परखकर देखो
१५ ऐतिहासिक गौरवगाथा
१८ मीठी यादें

संतोष का सुख

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : इच्छा कैसे उत्पन्न होती है?

दादाश्री : हमारा दोस्त सिनेमा देखकर आया हो, उस समय हमें भी मन में ऐसा लगे कि "हम भी सिनेमा देखने जाएँगे।" यह इच्छा मन में होती है। दोस्त को देखकर सिनेमा देखने की इच्छा हुई फिर, सिनेमा देखने नहीं जाएँ तब तक शांति नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : किसी की गाड़ी देखें तो हमें भी गाड़ी चाहिए ऐसी इच्छा हो जाती है। ऐसा क्यों होता होगा?

दादाश्री : खुद को भीतर से संतुष्टि नहीं है इसलिए। फिर गाड़ी ले ले तभी संतोष होगा। संतोष तभी होता है जब इच्छा पूरी हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इच्छा हमेशा के लिए कैसे पूरी हो सकती है? एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी पैदा हो जाती है।

दादाश्री : दूसरी तो हमेशा आएगी ही। ये इच्छा का समुद्र हैं। एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी शुरू हो जाती है। एक के बाद एक आती ही रहती है।

प्रश्नकर्ता : तो संतोष कैसे रह सकता है?

दादाश्री : जैसे-जैसे ज्ञान की समझ आती है, वैसे-वैसे संतोष होता है कि यह दुःखदाई है। मोह की वजह से सब ले आते हैं लेकिन दुःखदाई है ऐसा पता चलता है। इसलिए उस तरफ का प्लस-माइनस होकर संतोष हो जाता है। संतोष हो उसके लिए ज्ञान की ज़रूरत है। सही समझ आ जाए तब मन परेशान नहीं करता, उससे फिर संतोष रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या दादा, जिसमें सहज संतोष आया हो, उसका डेवेलपमेन्ट ज्यादा होता है?

दादाश्री : हाँ, बहुत डेवेलपमेन्ट होता है।

प्रश्नकर्ता : सहज संतोष कैसे हो सकता है?

दादाश्री : कितने ही जन्मों से "इसमें सुख नहीं, इसमें सुख नहीं" ऐसी खोज करके निष्कर्ष निकाला हो तब आता है।

इस जगत् में कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि जिससे इच्छा बुझे। जब कुछ ऐसी समझ आए तब संतोष रहता है। संतोष एक तरह का ज्ञान है, डेवेलपमेन्ट है। संतोष धन आए, फिर उसकी शक्ति कुछ और ही तरह की होती है!

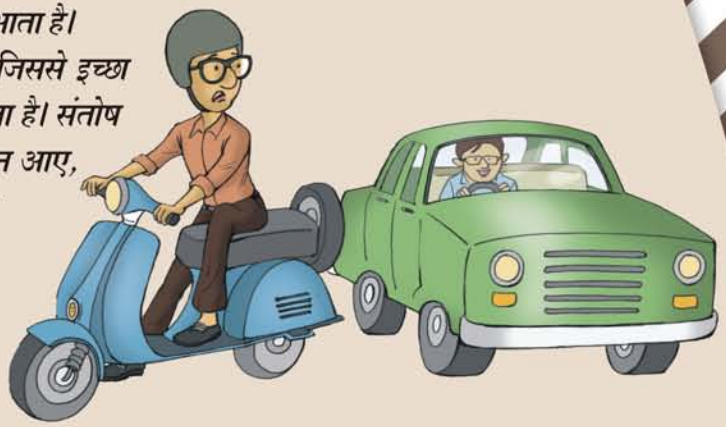

यह तो नई

इच्छा यानी रूई में आग लगाना। किसी भी तरह की इच्छा हुई कि अग्नि जलना शुरू हो जाती है। जब तक यह अग्नि बुझती नहीं है(मतलब इच्छा पूरी नहीं होती) तब तक जलती ही रहती है।

इच्छा तो भीख है। जो सहज रूप से मिले उसे भोगना चाहिए। जो सामने आए, उसे शांति से खाना-पीना, सबकुछ करना। जबकि ये तो इच्छा करके भीख माँगते हैं कि "वह मिले तो कितना अच्छा" और जो मिलता है, उसमें संतोष नहीं है।

जिसकी तीव्र इच्छा होती है, वह चीज़ मिले बिना नहीं रहती। दो साल, पाँच साल में मिलती ही है। तीव्र इच्छा खुद ही कहती है कि वह पूरी होगी ही।

ही बात!

तुम सभी को अपने अंदर पता लगाना चाहिए कि कौन कौन सी इच्छा अंदर रह गई है। पहले पूछना कि "सिनेमा देखने जाने की इच्छा है?" फिर दूसरा पूछना, तीसरा पूछना भीतर से जवाब मिलेगा और रोज़ सुबह होने पर पाँच बार सच्चे दिल से बोलना, "इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए।" इतना बोलते रहना। फिर भी इच्छा हो जाए तो बार-बार यह निश्चय करना। फिर ज़िम्मेदारी नहीं रहती।

निरीच्छक यानी जिसे किसी भी तरह की इच्छा न हो। निरीच्छक को हर चीज़ सामने से आकर मिल जाती है, अपने आप ही मिल जाती है। इच्छा नहीं करें तो भी आ मिलती है। उसे ज्ञानी का पद प्राप्त होता है।

सुखी मनुष्य का कुर्ता

घड़ी में ग्यारह बज रहे थे। "हितार्थ, अब सो जा न, कब से करवटें बदल रहा है!" चिन्मय अपनी रज़ाई में से बोला।

लेकिन जब से हितार्थ अपने मामाजी के घर से आया था, तब से उसकी नींद ही उड़ गई थी। बेंग्लोर शहर की शान और शौकत देखकर हितार्थ आश्चर्यचकित हो गया था। अपने कज़िन की चीज़ें देखकर, वैसी ही चीज़ें लेने की इच्छा उसे जला रही थी।

"चिन्मय, अगर हम भी बेंग्लोर में रह रहे होते तो! अंकुर कितना लकी है! कितनी ज़ोरदार हाई-राइज़ बिल्डिंग में रहता है। उसके रूम से व्यू देखा था? और हमारा रूम देखो।" हितार्थ निराश होकर बोला।

"हं, अच्छा व्यू था। लेकिन अपने रूम का व्यू भी अच्छा ही है न!" चिन्मय ने सोते-सोते जवाब दिया।

"क्या खाक अच्छा है?" हितार्थ चिढ़कर बोला, "हमारे रूम से तो सिर्फ पेड़ दिखते हैं, और उसके रूम से तो दुनिया दिखती थी। मुझे तो फिर से वहाँ जाना है। मुझे तो वहीं जाकर रहना है।"

चिन्मय ने रज़ाई से बाहर सिर निकालकर देखा तो हितार्थ मुँह लटकाकर खिड़की के पास बैठा हुआ था। चिन्मय बिस्तर से उठकर उसके पास गया।

"भाई, अपने पास जो हो उसी का मज़ा लेना चाहिए। किसी की चीज़ों को देखकर उसकी इच्छा करके क्यों दुःखी होना चाहिए?" थोड़ी देर रुककर चिन्मय खिड़की से बाहर देखकर बोला, "यह चाँद देख, कितना सुंदर दिख रहा है। यह कभी सूर्य की तरह बनने की इच्छा करता है?"

"नहीं, ऐसी तुलना कौन करेगा? दोनों अपनी अपनी जगह योग्य ही हैं।" हितार्थ ने कहा।

"ठीक है, इसी तरह हमें जो मिला वह अपने लिए योग्य है, और दूसरों को जो मिला वह उनके लिए योग्य है। बेकार की तुलना और इच्छा करके दुःखी क्यों होना चाहिए?" चिन्मय ने हितार्थ को समझाने का प्रयत्न किया।

लेकिन हितार्थ को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बस, दिन-रात बेंग्लोर जाने की धुन उस पर सवार हो गई थी।

और अंत में एक दिन, हितार्थ की तीव्र इच्छा पूरी हुई। गर्मी की छुट्टियों में चिन्मय ने समर कैम्प में जाने का निश्चय किया और मम्मी, हितार्थ को लेकर थोड़े दिनों के लिए बेंग्लोर गई।

वह खुश था। बेंग्लोर से वह पहले से ही आकर्षित था। आज थीम पार्क तो कल मोल, रोज़ उसे अलग-अलग जगह घूमने जाना और नया-नया लेने की इच्छा होती। सबकुछ करते हुए भी उसे कुछ न कुछ तकलीफ और असंतोष रहता। फल स्वरूप वह दुःखीरहता।

एक दिन मम्मी हितार्थ और अंकुर को शॉपिंग करने ले गई। अंकुर और हितार्थ ने अपनी पसंद के शूज़ और गेम्स खरीदें। घर जाने के बाद हितार्थ को अपनी पसंदगी पर दुःख होने लगा और अंकुर जैसे शूज़ खरीदने की इच्छा हुई।

"मम्मी, मुझे भी अंकुर जैसे शूज़ लेने हैं," हितार्थ ने धीरे से अपनी इच्छा व्यक्त की।

हितार्थ के इस असंतुष्ट व्यवहार से मम्मी बहुत परेशान हो गई थी। चिढ़कर उन्होंने कहा, "हितार्थ, शूज़ तो बाकी रहे, अब इस पूरी ट्रिप में मैं तेरे लिए कुछ नहीं खरीदूँगी। तेरी माँगों का तो कोई अंत ही नहीं आता।"

मम्मी की ऐसी कठोर वाणी सुनकर हितार्थ रूठकर बाल्कनी में चला गया। जाली पकड़कर

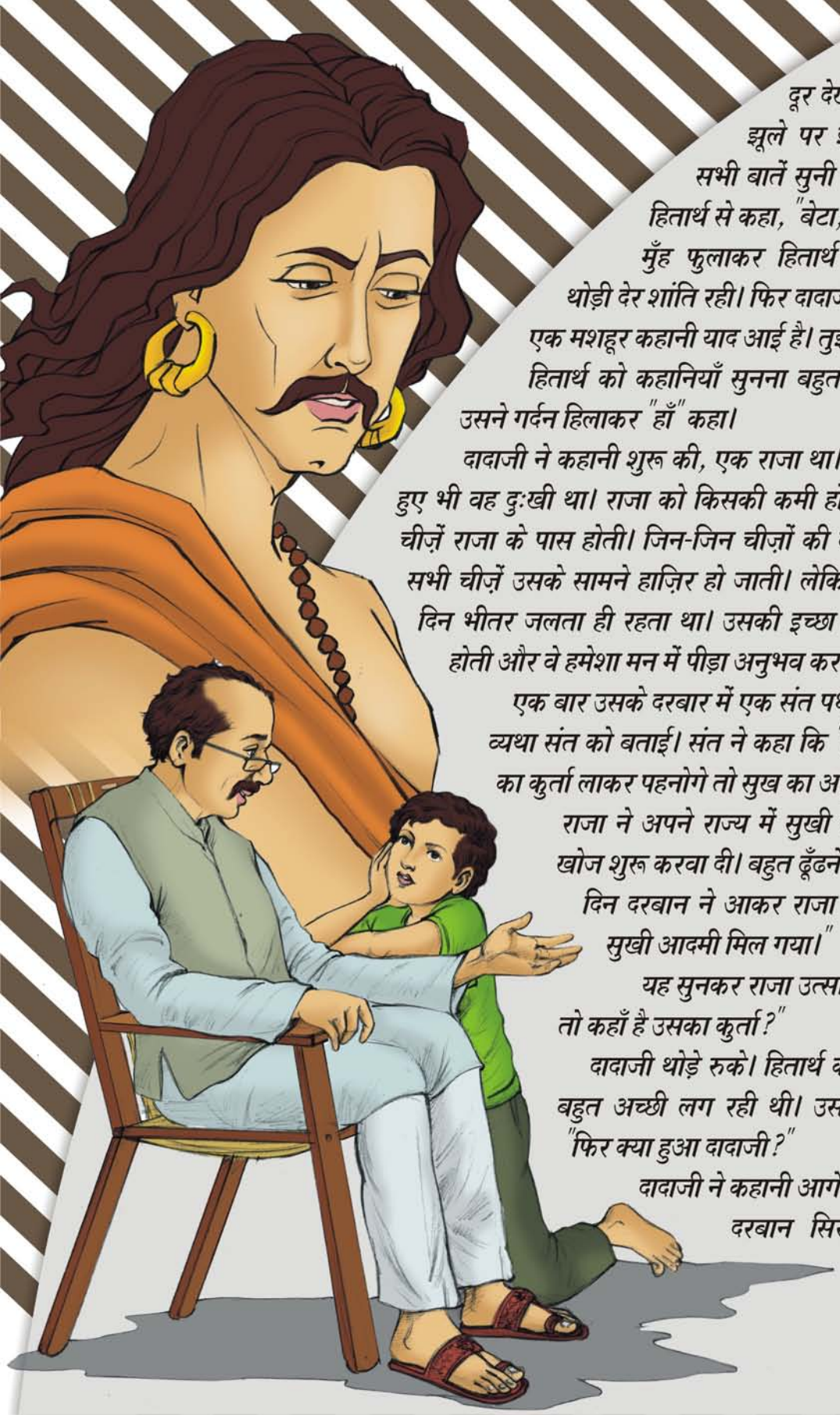

दूर देखते हुआ खड़ा रहा।

झूले पर झूल रहे दादाजी ने सभी बातें सुनी थी। धीरे से उन्होंने हितार्थ से कहा, "बेटा, आ मेरे पास बैठ।"

मुँह फुलाकर हितार्थ उनके पास बैठा। थोड़ी देर शांति रही। फिर दादाजी बोले, "आज मुझे एक मशहूर कहानी याद आई है। तुझे सुननी है?"

हितार्थ को कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता था। उसने गर्दन हिलाकर "हाँ" कहा।

दादाजी ने कहानी शुरू की, एक राजा था। अत्यंत समृध्द होते हुए भी वह दुःखी था। राजा को किसकी कमी होगी? तरह तरह की चीज़ें राजा के पास होती। जिन-जिन चीज़ों की वह इच्छा करता, वे सभी चीज़ें उसके सामने हाज़िर हो जाती। लेकिन फिर भी वह पूरे दिन भीतर जलता ही रहता था। उसकी इच्छा कभी शांत ही नहीं होती और वे हमेशा मन में पीड़ा अनुभव करते।

एक बार उसके दरबार में एक संत पधारे। राजा ने अपनी व्यथा संत को बताई। संत ने कहा कि "किसी सुखी आदमी का कुर्ता लाकर पहनोगे तो सुख का अनुभव करोगे।"

राजा ने अपने राज्य में सुखी आदमी के कुर्ते की खोज शुरू करवा दी। बहुत ढूँढने के बाद अंत में एक दिन दरबान ने आकर राजा से कहा, "राजाजी, सुखी आदमी मिल गया।"

यह सुनकर राजा उत्साहित हो गए, "ऐसा! तो कहाँ है उसका कुर्ता?"

दादाजी थोड़े रुके। हितार्थ को राजा की कहानी बहुत अच्छी लग रही थी। उसने बेसब्री से पूछा, "फिर क्या हुआ दादाजी?"

दादाजी ने कहानी आगे बढ़ाई।

दरबान सिर झुकाकर बोला,

"उस सुखी फकीर के शरीर पर कुर्ता ही नहीं था।"

यह सुनकर राजा को झटका लगा, "संत ने राजा को समझाते हुए कहा, राजाजी तुमने भौतिक चीज़ों की इच्छा की, उन चीज़ों में सुख ढूँढने का प्रयत्न करते हो। लेकिन सुख इन भौतिक चीज़ों में है ही नहीं। खरा सुख तो सही समझ में है। फकीर के पास आपकी तरह राज-सुख या वैभव नहीं है, लेकिन उसके पास संतोष रूपी धन है। और उस संतोष रूपी धन से वह सुखी है। वह फकीर इच्छा नहीं करता फिर भी ज़रूरत की चीज़ें उसे मिल ही जाती है। इच्छा की अग्नि में वह कभी नहीं जलता और इसीलिए वह इतना सुखी है!"

कहानी पूरी करके दादाजी ने हितार्थ से कहा, "बेटा, तेरे मम्मी-पापा हमेशा तेरी ज़रूरत और पसंद की चीज़ें तुझे लाकर देते हैं। फिर भी तू उस राजा की तरह बेकार ही इच्छा करके हमेशा दुःखी ही रहता है। अब तू ही बता, तुझे राजा की तरह दुःखी रहना है या फकीर की तरह सुखी होना है?"

उसी क्षण हितार्थ ने फकीर की तरह सुखी रहने का निश्चय कर लिया।

बेंग्लोर से वापस आने के बाद, एक दिन हितार्थ और चिन्मय अपने रूम की खिड़की के पास रखी हुई स्टडी टेबल पर अपना होमवर्क कर रहे थे। अचानक हितार्थ रूम के बाहर देखने लगा।

"क्या देख रहा है?" चिन्मय ने जिज्ञासापूर्वक पूछा।

"कुछ नहीं, बस यही कि अपने रूम का व्यू भी बहुत अच्छा है!"

दोनों हँसने लगे और फिर होमवर्क करने लगे।

इच्छा का घड़ा

एक राजा था। राजा की तरह प्रजा भी उसकी बहुत सुखी थी। राजा का एक दरबान था। राजा उसे बहुत चाहता और मानता था।

एक दिन, रोज़ का काम पूरा करके दरबान अपने घर जा रहा था। एक बड़े पेड़ के नीचे से गुज़रते हुए उसने एक आवाज़ सुनी

दरबान ने आसपास देखा तो कोई नहीं दिखा। उसे आश्चर्य हुआ।

यह सुनकर दरबान घर की तरफ दौड़ा। पत्नी को लेकर घर के पीछे गया। सोने की मोहर से भरे हुए घड़े देखकर वह चकित हो गया।

लेकिन यह सातवाँ घड़ा कैसे भरेंगे?

इसकी क्या ज़रूरत है? इतना मिला है, यही बहुत है।

चुप रह पागल।

और सातवाँ घड़ा भरने की इच्छा दरबान के भीतर जाग उठी।

उसने घर में पड़े हुए सभी गहनों की सोने की मोहर बनवा दी। फिर भी घड़ा नहीं भरा।

राजा को खुश कर दूँ ताकि सोने की मोहर इनाम में मिले तो यह घड़ा भर जाएगा।

वह राजा की खुशामद करने लगा। राजा भी उसकी चाकरी से खुश होकर उसे इनाम देने लगे। इनाम में मिली हुई सोने की मोहरें लाकर वह घड़े में डालता। आश्चर्य की बात यह थी कि कुछ भी करने पर भी सातवाँ घड़ा भर ही नहीं रहा था।

अब उसे राजा से मिलनेवाला इनाम कम लगने लगा।

हमारे राजा बहुत कंजूस हैं। हम इस राज्य को छोड़कर दूसरे राज्य में जाकर रहते हैं। वहाँ हम बहुत धन कमाएँगे।

धन नहीं, अब पुण्य कमाने की ज़रूरत हैं। भगवान की दया से हमारे पास बहुत धन हो गया है। अब तो दानधर्म करके संतोषपूर्वक जीना है।

लेकिन दरबान को पत्नी की बात गले नहीं उतरी। उसकी नींद हराम हो गई थी। वह सारे दिन सातवाँ घड़ा भरने के लिए क्या करे उसकी तरकीबें ढूँढने लगा।

दरबान के भीतर उस घड़े को भरने की इच्छा इतनी ज्यादा सुलग उठी कि एक समय सुखी और संतुष्ट रहनेवाला दरबान बहुत ही बेचैन और पागल जैसा हो गया।

इच्छा का घड़ा भी ऐसा ही है। वह कभी भी नहीं भरता। पराई चीज़ों की इच्छा रखें तो हम भी दरबान की तरह अपना सुख-चैन गवाँ देंगे।

अपने आपको परखकर देखो

दादाजी कहते हैं कि इच्छा तो अग्नि के समान है। तो मित्रो, आज तुम फायर-फाइटर बनकर, अपने फ्रेन्ड की इस अग्नि को बुझाने में मदद करोगे?

नीचे दिए गए प्रसंगों में से ढूँढो कि किस मित्र को इच्छा रूपी अग्नि लगी है? उस आग को बुझाने के लिए योग्य फायर-एक्सटिंग्विशर (आग बुझाने का साधन) ढूँढकर, टेबल में अपना जवाब लिखें।

१. फोन की घंटी बजी, इसलिए भूमि फोन लेने के लिए कूदी...

"हाय भूमि, तन्वी बोल रही हूँ, इस सन्डे मेरी बर्थ-डे पार्टी है और तुझे ज़रूर आना है," तन्वी ने भूमि को निमंत्रण देते हुए कहा।

"भूमि को तो कितनी ज्यादा पार्टियों में जाने का निमंत्रण मिलता है। वह कितना मज़ा करती है और मुझे तो कोई कभी बुलाता ही नहीं" इस विचार से भूमि की छोटी बहन रिद्धि, जो कुछ क्षणों पहले खुश थी, वो दुःखी हो गई।

२. सन्डे शाम को तन्वी के घर बहुत चहल-पहल थी।

"तन्वी, कितनी फेमस है न! जैसे पूरी स्कूल ही उसकी पार्टी में आ गई हो! काश, हम भी इतने फेमस होते!" कोल्ड ड्रिंक पीते हुए नीति बोली।

"छोड़ न, मुझे तो भूख लगी है। डिनर में पीज़ा हो तो अच्छा। कितने दिन से पीज़ा खाने का मन हो रहा है," भूमि बोली।

डिनर में पीज़ा नहीं था इससे भूमि का मूड ऑफ हो गया। बस, उसके मन पर पीज़ा खाने का भूत सवार हो गया था।

३. थोड़ी देर बाद सभी ने गेम शुरू की।

"यार, ऐसा लगता है वो लोग कोई ज़ोरदार वीडियो देख रहे हैं। चल हम भी उनके साथ बैठते हैं।" बड़े लडकों के ग्रूप की तरफ इशारा करते हुए अश्मी ने निकिता से कहा।

"अरे, हमें क्या काम है? हम भी तो मज़ा कर ही रहे हैं न? तुम अपनी गेम पर ध्यान रखो न!" निकिता ने अश्मी से कहा।

४. पार्टी खत्म होने के बाद तन्वी की मम्मी सभी को रिटर्न गिफ्ट दे रही थी।

अचानक उन्हें ख्याल आया कि एक गिफ्ट कम है, वह उलझन में आ गई।

रुचि ने आन्टी को साईड में बुलाकर कहा, "आन्टी हमने पार्टी में बहुत मज़े किए है। आप बिल्कुल चिंता मत कीजिए। आप सभी को गिफ्ट दे दीजिए। मैं तो यह मज़ा अपने साथ ले जाऊँगी।"

ऊपर दिए गए प्रसंगों में, किन-किन को इच्छा रूपी आग जला रही थी, उसे इस टेबल में लिखिए।

मित्र का नाम	इच्छा रूपी आग जल रही है?(हाँ/ना)
भूमि	
रिद्धि	
तन्वी	
नीति	
अश्मी	
निकिता	
रुचि	

अब नीचे दिए गए फायर-एक्सटिंग्विशर में से योग्य फायर-एक्सटिंग्विशर ढूँढकर उस पर सर्कल कीजिए।

१. तन्वी की मम्मी को पीज़ा की होम-डिलीवरी कराने की सूचना देनी चाहिए।

२. पार्टी में जाने का मन हो, तो पहुँच जाना चाहिए। निमंत्रण की क्या ज़रूरत है?

३. फेमस होने के लिए, अक्सर घर में पार्टी का आयोजन करके सभी को बुलाना।

४. अपने मन को समझाना चाहिए, "हर एक चीज़ कुदरती ढंग से, अपने समय से, अपने आप ही मिल जाती है। आप इच्छा नहीं करेंगे तो भी मिल जाती है और इच्छा करने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। बल्कि इच्छा दुःख देती है वह अलग। मैं क्यों इसमें पड़ूँ?"

५. रिटर्न गिफ्ट पोस्ट करने के लिए अपने घर का पता दे देना चाहिए।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

तेरवीं शताब्दी की बात है। गुजरात में एक तेजस्वी महापुरुष हो गए। उनका नाम वस्तुपाल था। उन्होंने आचार्य विजयसेनसूरीजी की अपने गुरु पद पर स्थापना की थी। आचार्य के एक शिष्य थे। हमेशा आत्म साधना में रहनेवाले ये शिष्य-गुरु की संपूर्ण अधीनता और विनय में थे।

उस समय के राजा वीरधवल ने वस्तुपाल को गुजरात का महा मंत्री बनाया। वस्तुपाल और उनके छोटे भाई तेजपाल ने मिलकर अपनी शक्ति और होशियारी से गुजरात को समृद्ध बना दिया था।

लेकिन महामंत्री वस्तुपाल को बहुत समय से एक बात की चिंता सता रही थी। देवभूमि शेत्रुंजय महातीर्थ की देखभाल जिस किसी को भी सौंपने में आती, वह लोभ के वश होकर देवधन का रक्षक बनने के बजाय भक्षक बन जाता। महातीर्थ शेत्रुंजय पर लोगों की अपार भक्ति थी। लेकिन कोई देवधन का रक्षण करने के लिए सुयोग्य प्रामाणिक व्यक्ति नहीं था।

एक दिन, महामंत्री अपने गुरु आचार्य विजयसेनसूरी के पास गए। आचार्य को वंदन करते समय उनकी नज़र आचार्य के वयोवृद्ध शिष्य पर पड़ी। एक कौने में वे शांत चित्त से बैठे थे। मंत्रीश्वर उन शिष्य को देख रहे थे। उन्होंने सोचा "शेत्रुंजय की देखभाल के लिए ऐसा ही कोई व्यक्ति जाए तो। जिसके लिए संपत्ति तिनके के समान हो। तो उस महातीर्थ की देखभाल आदर्श ढंग से हो सकती है। देवधन का नाश रुक जाए और मेरे सिर से एक बड़ी चिंता चली जाए।"

महामंत्री ने अपने मन की बात गुरुदेव से कही, "गुरुदेव, देवधन का नाश होता हो तो उसकी अवहेलना करना ठीक है या उसकी रक्षा के लिए प्रयत्न करना ठीक है?"

गुरु ने तुरंत ही कहा, "ये भी कोई पूछने की बात है? देवधन की तो प्राण देकर भी रक्षा करनी चाहिए न?"

तो गुरुदेव, मेरी एक विनती ध्यान में लेने की कृपा कीजिए। महातीर्थ शेत्रुंजय की देखभाल बिगड़ रही है। उसकी देखभाल के लिए प्रामाणिक, नीतिपारायण और धर्मभावनाशील व्यक्ति मिले तो ही काम चले ऐसा है। और उसके लिए मेरी नज़र इन वयोवृद्ध मुनिवर पर ठहरती है। आप आज्ञा करें कि ये मुनिवर इस ज़िम्मेदारी को संभालने के लिए तैयार हो। आप तो शासन के शुभचिंतक हैं। इसलिए मेरी यह विनती कृपया मत ठुकराईए।

आचार्य यह विनती सुनकर दुविधा में पड़ गए। कहाँ सभी मोह से दूर रहकर आत्मसाधना करनेवाला मुनि जीवन और कहाँ यह अनेकों जंजालों से भरा काम।

आचार्य के गले से यह बात नहीं उतरी

लेकिन मंत्रीश्वर की बहुत ही भावनाशील विनती को वे ठुकरा भी नहीं सकें।

आचार्य ने उन वयोवृद्ध मुनिवर को बुलाकर आज्ञा कि, "मुनि, हमारे मंत्री कह रहे हैं उसके अनुसार तुम्हें शेत्रुंजय महातीर्थ की सेवा करनी है।"

खुद सहमत नहीं होने पर भी अंत में मुनिवर ने गुरु की आज्ञा स्वीकार की और शेत्रुंजय की देखभाल करने पहुँच गए।

मुनि सावधानी रखते हुए अपना फर्ज निभा रहे थे। तीर्थभूमि का हिसाब किताब सुधरने लगा। देवधन की रक्षा होने लगी। देवधन से अपने स्वार्थ साधनेवाले दुःखी हो गए। उन्हें लगा जैसे उनके सुख का साधन छिन गया हो! उन लोगों को मुनिवर आँख के तिनके की तरह खटकने लगे। वे तो हमेशा यही सोचते, "किस तरह ये आफत टले?" और उन्होंने अपना मोहक मायाजाल बिछाना शुरू कर दिया।

एक दिन इन सभी स्वार्थी लोगों ने मिलकर मुनिवर से भावपूर्ण स्वर से विनती कि, "महाराज, आप तो इतने बड़े तीर्थ के रखवाले हैं! आपसे मिलने तो बड़े-बड़े साहूकार और राजा आते हैं। आपको क्या ऐसे गंदे, फटे कपड़े शोभा देते हैं। पद के अनुसार वस्त्र तो होने चाहिए?"

मुनि मौन रहे और दंभी लोगों ने उनके शरीर को सुंदर वस्त्रों से मढ़ दिया। फिर एक दिन उन्होंने कहा, "आपको तो बड़े-बड़ें ठाकुरों से बात करनी पड़ती है। तब मुँह में से कुछ सुगंध तो आनी चाहिए न।" ऐसा कहकर उन्होंने मुनि के मुँह में सुगंधित मसाले भर दिए।

मुनि तो यही मानते थे कि इससे मुझे क्या लेना देना? मुझे तो कर्तव्य की दृष्टि से यह सब मजबूरन करना पड़ता है।

लेकिन वास्तव में मुनि के अंदर इन सभी भौतिक चीज़ों की इच्छा जागने लगी थी।

उसके बाद, मुनि के लिए स्वादिष्ट भोजन की सामग्रियाँ भी तैयार होने लगीं। फिर तो बात इतनी आगे बढ़ गई कि मुनि को पैरों से चलना भी मुश्किल लगने लगा। वे पालकी का उपयोग करने लगे। जब कभी पालकी समय पर नहीं मिलती तो वे लाल-पीले हो जाते।

दंभी लोगों का तीर निशाने पर लग चुका था। मुनि धीरे-धीरे त्याग का मार्ग छोड़कर भौतिक सुख प्राप्त करने के मार्ग पर बढ़ रहे थे।

एक बार महामंत्री वस्तुपाल शेत्रुंजय तीर्थ की यात्रा के लिए निकले। यात्रा पूरी करके वे नगर की तरफ जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने आश्चर्यचकित करनेवाला दृश्य देखा।

पंद्रह बीस लोगों की टोली एक व्यक्ति को पालकी में बिठाकर जय जयकार कर रही थी!

वस्तुपाल ने रास्ते में किसी से पूछा, "ये क्या हंगामा है?"

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "जो मुनि तीर्थ की देखभाल और देवधन की रक्षा करने के लिए आए थे, वे पालकी में बैठकर जा रहे हैं। उन्होंने तो ज़ोरदार ठाठ जमाया है। उनका प्रभाव भी बहुत है। सभी उनकी जय जयकार कर रहे हैं।"

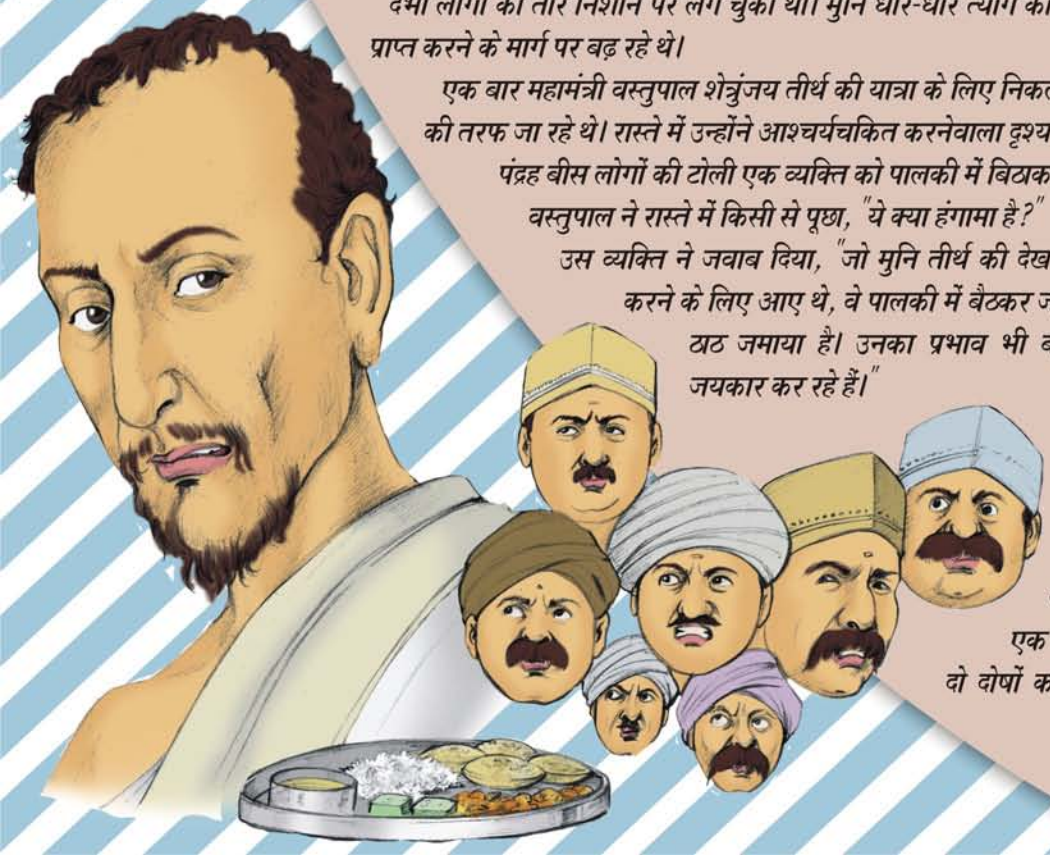

बोलनेवाले के मन में बहुत ही अहो भाव था लेकिन वस्तुपाल को लगा, "मुनि का इतना ज्यादा पतन! हे भगवान, एक दोष को दूर करने में मैं तो दो दोषों का भागीदार

बन गया। त्यागी भोगी बन गए और भोले भद्रिक लोग अधर्म के मार्ग पर चल पड़े। और देवधन की दशा जैसी थी वैसी ही रही।"

मंत्रीश्वर व्याकुल हो उठे। उन्होंने तुरंत अपने मन पर काबू पा लिया। स्वस्थ होकर पालकी के पास पहुँच गए और मुनि को बहुत ही आदरपूर्वक वंदन किया।

मुनि के प्रति बिल्कुल भी अभाव या तिरस्कार लाए बिना मंत्री ने मुनि से कहा, "आप काम पूरा करके अपने स्थान पर पधारिए। तीर्थ की देखभाव के बारे में थोड़ी बात करनी है।"

मंत्री वस्तुपाल अपने निवास पर गए। लेकिन मंत्री को देखकर मुनि बहुत ही गंभीर हो गए। घायल प्राणी की तरह ज़ोरदार वेदना अनुभव करने लगे। वस्तुपाल ने उनसे एक भी कड़वा शब्द नहीं कहा था लेकिन मुनि को बहुत शर्म महसूस हो रही थी। उन्हें लगा, "हे प्रभु! मुझसे कितनी बड़ी भूल हो गई। कहाँ मेरा निर्मल संयम और कहाँ मेरा घोर पतन। संयम की सीढ़ी से ऊपर चढ़ रहा था और कहाँ इस खाई में गिर पड़ा।"

मुनि ने महामंत्री वस्तुपाल से कहलवाया, "मंत्रीवर! अपना कलंकित चेहरा लेकर मैं आपके पास नहीं आ सकता। आपकी सौंपी हुई ज़िम्मेदारी को निभाने में मैं बिल्कुल निष्फल हुआ हूँ। भौतिक चीज़ों को भोगने में मैं बिल्कुल अंधा हो गया था। लेकिन अब मैं जागृत हो गया हूँ। प्रायश्चित के रूप में अपनी आत्मा पर लगे हुए कलंक को धोने के लिए मैंने कठोर तपस्या करने की प्रतिज्ञा की है।"

मंत्री ने यह बात सुनी। भौतिक चीज़ें भोगने के सागर में डूबते हुए मुनि को, क्षणभर में ही फिर से आत्मसाधना की सीढ़ी चढ़ते हुए देखकर, महामंत्री वस्तुपाल बहुत खुश हुए। और वे मन ही मन मुनि को वंदन करने लगे।

परम पूज्य दादाश्री के देहविलय को २-३ साल ही हुए थे। नीरू माँ ने गाँव-गाँव और देश-विदेश परम पूज्य दादाजी का ज्ञान फैलाना शुरू कर दिया था। महात्माओं का नीरू माँ के प्रति बहुत ही प्रेमभाव था।

यह प्रसंग टोरन्टो(केनेडा) का है। नीरू माँ सत्संग के लिए टोरन्टो जानेवाली थीं। नीरू माँ टोरन्टो आ रही हैं, ये खबर मिलते ही वहाँ के एक महात्मा बहन, नीरू माँ के आने की खुशी में इतनी भावविभोर हो गई कि क्या करें यह उन्हें समझ में नहीं आ रहा था।

एक तरफ जॉब और दूसरी तरफ नीरू माँ के आने की तैयारी। समय का संपूर्ण अभाव। जॉब में एक घंटे का लंच ब्रेक मिले तब वे बहन नीरू माँ को देने के लिए कोई चीज़ लेने पास के स्टोर में जाते। उस बहन को इतना आनंद और भक्ति भाव था कि नीरू माँ को मैं क्या दूँ...? क्या दूँ...? ऐसा मन में होता रहता था। बहुत सी जगहों पर घूमे फिर उन्हें एक स्वेटर मिला। मन में संतोष तो नहीं था लेकिन ले लिया...

नीरू माँ आए तब बहन ने खुशी-खुशी उन्हें स्वेटर दिया। नीरू माँ की आँखें स्थिर हो गई और वे गंभीरता से बोलें "बहन, ये एक ही ऐसी जगह है जो प्योर है। इसे प्योर ही रहने दो न...!"

भावुक महात्मा बहन को आशय समझ में नहीं आने पर वे नीरूमाँ से आग्रहपूर्वक विनती करने लगी, "लेकिन नीरू माँ, मैं स्पेशियल यह आपके लिए ही लाई हूँ। बहुत प्रेम से लाई हूँ और मैंने यह लाने के लिए बहुत दौड़धाम की है। तो आप ले लीजिए न।"

नीरू माँ ने कहा, "नीरू माँ का स्वेटर है, ऐसा समझकर तुम पहनना..."

बहुत आग्रह करना ठीक नहीं, ऐसा लगने पर बहन ने स्वेटर वापस ले लिया। मन में कोई उल्टा विचार नहीं था।

मीठी यादें

जैसे-जैसे वे महात्मा ज्ञान में आगे बढ़ते गए, वैसे-वैसे उन्हें नीरू माँ के कहे हुए शब्दों की गहनता का ख्याल आने लगा कि उनकी प्योरिटी की क्या कीमत है और इस मामले में उनकी कितनी जागृति है। उन्हें इस जगत् में प्योर होकर ही रहना था। किसी भी हाल में गिरना नहीं था।

उसके बाद जब-जब महात्मा को नीरू माँ याद आते, उनका मस्तक झुक जाता॥

प्योरिटी तो बस ज्ञानी जैसी ही हो!!

पूज्य श्री के सानिध्य में मनाई गई गुरुपुर्णिमा के दौरान अमेरिका के बच्चों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम और साइन्स फेर के फोटोस।

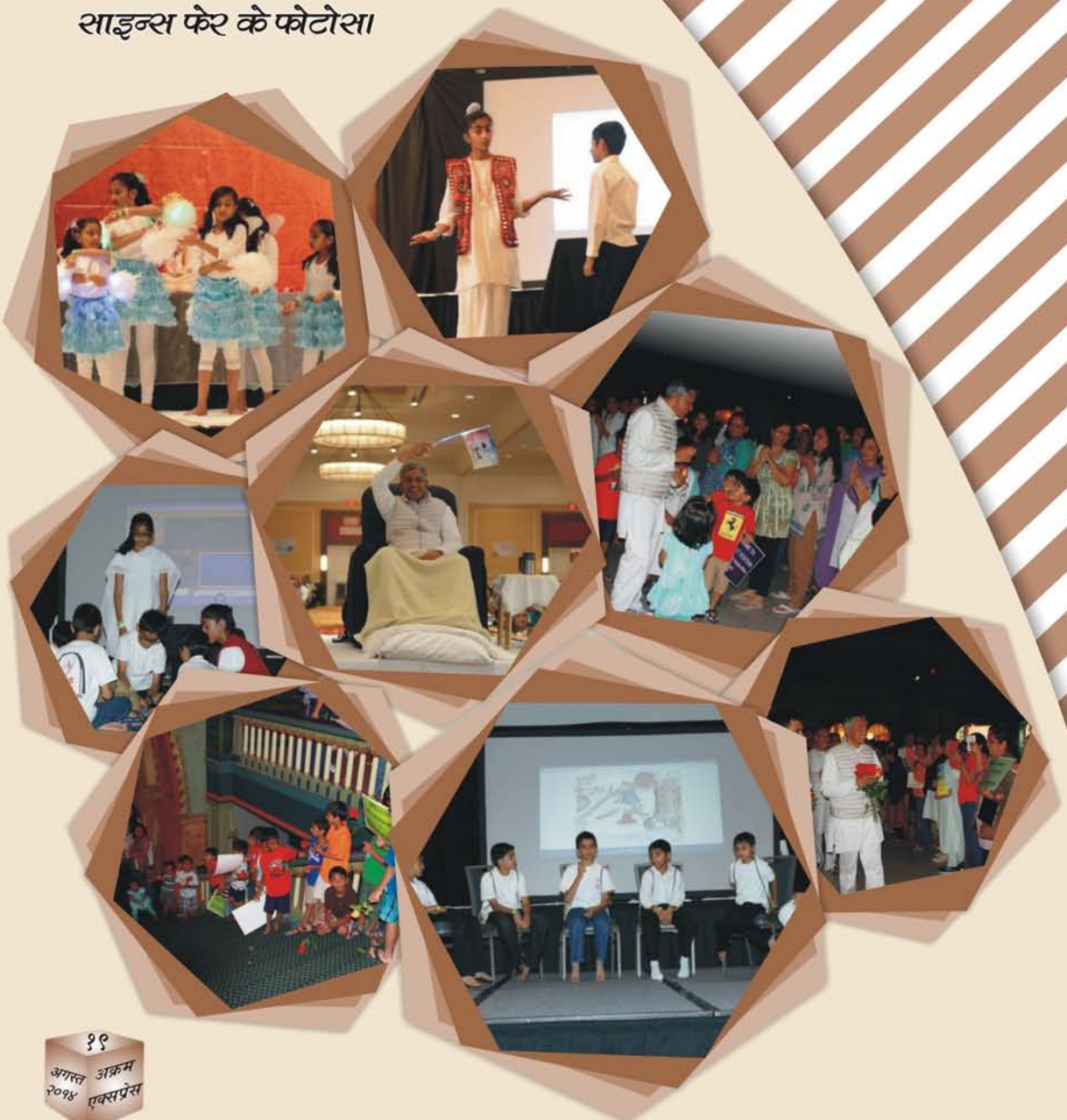

Akram Express

August 2014
Year : 2, Issue : 5
Conti. Issue No.: 17

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, *२.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.